



# आर्थिक साक्षरता

सेंटर फॉर एजुकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन (सीईसी)

# आर्थिक साक्षरता

सेंटर फॉर एजुकेशन ऐण्ड कम्युनिकेशन (सीईसी)

173-ए, खिड़की गांव, मालवीय नगर, नई दिल्ली - 110017

फोन : 91-11-29541841/29541858

फैक्स : 91-11-29542464,

ई-मेल : [cec@cec-india.org](mailto:cec@cec-india.org), वेबसाइट : [www.cec-india.org](http://www.cec-india.org)

मई 2018

परिकल्पना एवं रचना :

दी इन्फॉर्मेशन ऐण्ड फीचर ट्रस्ट

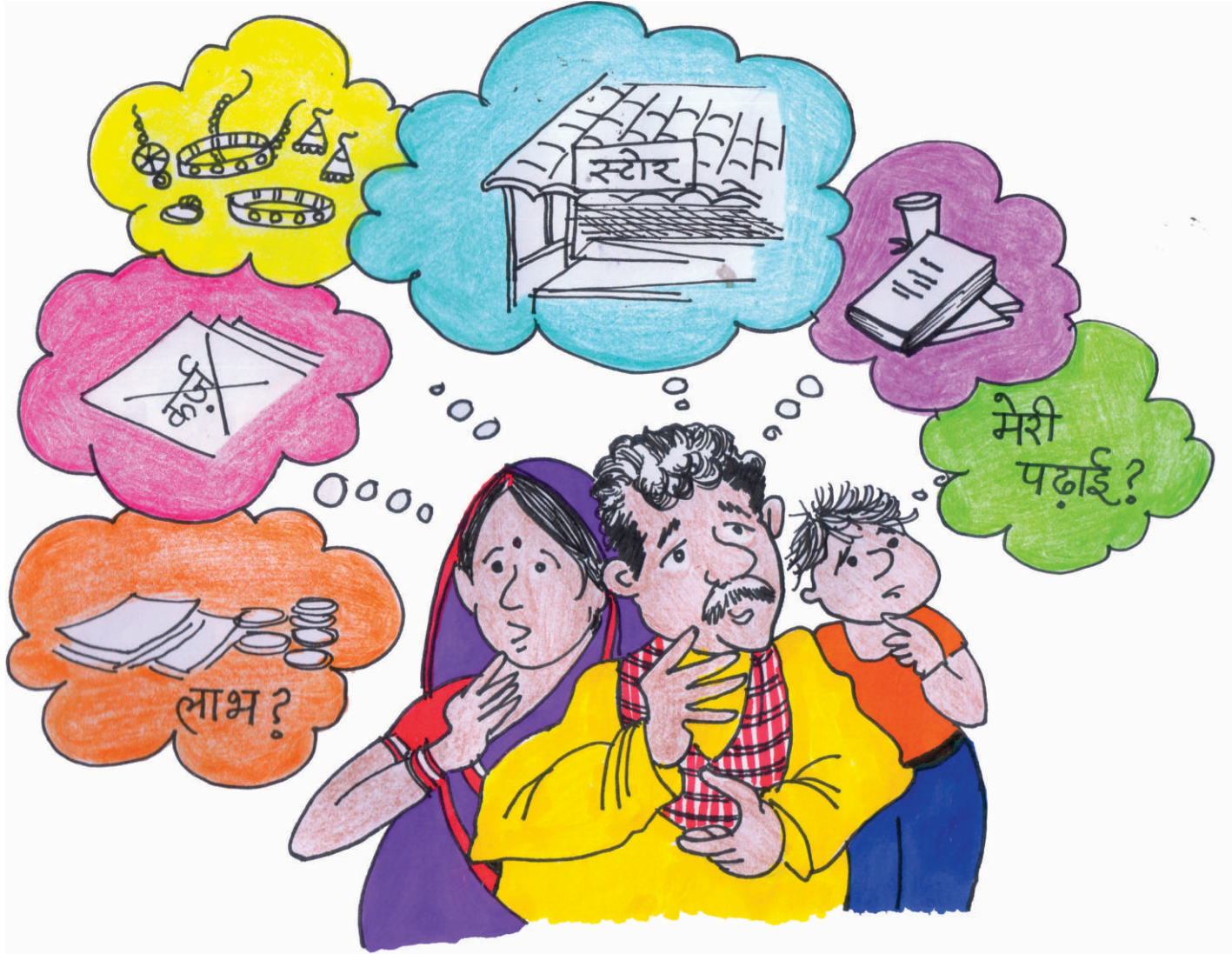
लक्ष्मी (कैयदम), तोंडयाड, कालीकट - 17

सामग्री निर्माण : रूची गुप्ता

विजुअल प्रस्तुति : रीचा चंद्रा

यह मॉड्यूल सीईसी द्वारा प्रयास एवं टेरे डे होम्स (टीडीएच) की साझेदारी में और यूरोपीय यूनियन की वित्तीय सहायता से चलायी जा रही परियोजना 'एम्पॉवरिंग सीएसओज़ फॉर डीसेंट वर्क ऐण्ड ग्रीन ब्रिक्स इन इंडियाज़ ब्रिक किल्स' के अंतर्गत तैयार किया गया है।

# अपनी समस्याओं को जानें



वित्तीय-प्रबन्धन

## अपनी समस्याओं को जानें

- क्या आपने अपनी आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पेशगी या कर्जा लिया है?
- क्या आप अपने उत्पादन और मजदूरी का हिसाब रखना जानते हैं? क्या आप हिसाब लगाकर यह बता सकते हैं कि आपकी आमदनी और आपको जो पैसा मिला है उसमें कितना फर्क बैठता है? क्या आप ब्याज का हिसाब लगाना जानते हैं?
- क्या आपको मालूम है कि आपके काम के लिए सरकार ने न्यूनतम मजदूरी दर क्या रखी है?
- क्या आपको लगता है कि गरीब बचत नहीं कर सकते?
- क्या आप किसी मुश्किल घड़ी, भविष्य की योजना या बुढ़ापे के लिए बचत कर पाते हैं?
- क्या आपको लगता है कि सिर्फ बेहद पढ़े-लिखे लोग ही नकदी को संभालना जानते हैं? क्या बैंकों और डाकखानों की योजनाओं का और स्वयं सहायता समूहों का फायदा उन्हीं को मिलता है?

## अपनी समस्याओं को जानें

- क्या आप आमदनी के दूसरे साधनों और ऐसी सुविधाओं को पहचान सकते हैं जिनसे आपको सीधे नकद राहत, सब्सिडी, स्वास्थ्य बीमा मिलता हो?

इस मॉड्यूल में हम आपको ऐसे कौशल और जानकारी देना चाहते हैं जिनकी मदद से आप आप रोजमर्रा के आर्थिक फैसले सोच-समझकर ले सकें।

# अपनी आर्थिक जरूरतों को पहचानें



## अपनी आर्थिक जरूरतों को पहचानें

अनिवार्य खर्चे : रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा

अपेक्षित घटनाएं : शादी-ब्याह, जचगी, त्यौहार

आपात स्थिति : बीमारी, दुर्घटना, मौत, प्राकृतिक आपदा

अन्य खर्चे : पुराने कर्ज की अदायगी, औजार और मशीन खरीदना।

वित्तीय प्रशिक्षण से हमें तीन अहम चीजों को समझने में मदद मिलती है : (1) आमदनी (बच्चों के श्रम से आने वाली आमदनी के अलावा), (2) खर्चा, और (3) बचत। इन तीनों को समझने के बाद हम अपने आर्थिक तनावों से जूझने की बजाय भविष्य के लिए अपने खर्चों की एक सही योजना तैयार कर सकते हैं।

# आमदनी





# आमदनी

याद रखें, न्यूनतम मजदूरी कानून, १९४८ में दी गई रोजगारों की सूची (शेड्यूल ऑफ एम्प्लॉयमेंट) में ईंटों के भट्टे भी आते हैं। इसका मतलब है कि भट्टों के मजदूरों पर इस कानून के सारे प्रावधान लागू होते हैं। कुशल, अर्धकुशल और अकुशल, सभी मजदूरों पर इस कानून के प्रावधान लागू होते हैं।

**न्यूनतम मजदूरी क्या होती है?**

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) ने कहा है कि न्यूनतम वेतन या न्यूनतम मजदूरी एक ऐसी न्यूनतम राशि है जो एक मालिक द्वारा अपने मजदूरों/कर्मचारियों को एक निश्चित अवधि के दौरान किए गए काम के बदले अदा की जाती है। इस राशि को किसी साझा समझौते या व्यक्तिगत अनुबंध के माध्यम से कम नहीं किया जा सकता।

भारतीय संसद ने १९४८ में न्यूनतम मजदूरी कानून पारित किया था और उसके माध्यम से यह तय किया था कि कुशल और अकुशल मजदूरों को कम से कम कितनी मजदूरी मिलनी चाहिए। अगर किसी मजदूर को न्यूनतम मजदूरी से भी कम दर पर मजदूरी का भुगतान किया जा रहा है तो इसका मतलब है कि उस मजदूर से बंधुआ मजदूरी कराई जा रही है।

# आमदनी

इस कानून में स्पष्ट किया गया है कि वेतन में मुद्रा के रूप में अभिव्यक्त होने वाली सारी भुगतान राशि समाहित है सिवाय इनके :

- आवास का मूल्य, रोशनी, पानी, चिकित्सकीय देखभाल की सुविधा का खर्चा
  - यात्रा भत्ता
  - पेंशन फंड या प्रॉविडेंट फंड के तहत अथवा किसी सामाजिक बीमा के तहत अदा किया गया अंशदान
- ईट भट्टा मजदूरों को निम्नलिखित का अधिकार है :

- न्यूनतम मजदूरी पाने का
- समय पर मजदूरी पाने का
- यह जानने का कि उनकी मजदूरी में से कितनी कटौती की गई है
- मजदूरी के भुगतान की पर्ची पाने का।

## आमदनी

चूंकि भट्टों पर भुगतान पीस रेट या इकाई दर पर किया जाता है इसलिए अपनी मजदूरी और उत्पादन का रिकॉर्ड रखना बहुत जरूरी होता है। अगर आपको कम पैसा मिलता है तो आपको मालिक या ठेकेदार से पेशगी अथवा कर्जा लेना पड़ता है। इस तरह आप कर्ज के जाल में फंस जाते हैं या पहले से मौजूद कर्जा और ज्यादा बढ़ जाता है।

आमतौर पर ईंट भट्टों में समय पर भुगतान नहीं किया जाता है। ज्यादातर भुगतान सीजन के आखिर में होता है। ऐसे में अगर आप हर हफ्ते का रिकॉर्ड रखेंगे तभी आप समझ सकते हैं कि सीजन के आखिर में आपको कितनी रकम मिलेगी जिसे आप घर ले जा पाएंगे।

इसके लिए आप इस तरह हिसाब रख सकते हैं :

नमूना बही

तारीख	कितनी ईंटें बनाईं/ढोईं	उत्पादन का मूल्य (ईंटों की संख्या X दर)	कटौतियां	खर्ची का भुगतान	कुल आमदनी	बकाया पेशगी

## आमदनी

ईट भट्टों पर ८-९ महीनों के लिए मौसमी रोजगार मिलता है। इसके बाद मजदूर वापस अपने गांव लौट जाते हैं। हो सकता है वहां उन्हें काम मिल जाए या काम न मिले। सरकार ने ऐसे मजदूरों के लिए बहुत सारे गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, बीमा योजना और सामाजिक सुरक्षा की औपचारिक व्यवस्थाएं शुरू की हुई हैं। इनके माध्यम से मजदूर नियमित रूप से आय हासिल कर सकते हैं। इसके लिए आपको इन योजनाओं के तहत लाभ के लिए आवेदन करना चाहिए। इनमें से कुछ योजनाएं इस प्रकार हैं :

- भवन एवं अन्य निर्माण मजदूर बोर्ड (बिल्डिंग ऐण्ड अदर कंस्ट्रक्शन बोर्ड) के तहत मिलने वाले लाभ
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना और आम आदमी बीमा योजना के अंतर्गत मिलने वाली चिकित्सा सहायता
- नकद सहायता एवं संस्थागत प्रसव के लिए प्रसूति लाभ कार्यक्रम
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत अनाज के लिए आवेदन करें
- बुजुर्गों, बूढ़ों और विकलांगों के लिए राष्ट्रीय सामाजिक सहायता योजना के तहत मासिक पेंशन

# खर्चा



# खर्चा

इनमें से कुछ का ब्यौरा दें :

कभी-कभी  
होने वाले खर्चे

हर रोज/हर हफ्ते  
होने वाले खर्चे

गैर-जरूरी  
खर्चे

लाजिमी या  
जरूरी खर्चे

महत्वपूर्ण सुझाव

- ऐसे खर्चों की योजना बनाएं जो नियमित रूप से नहीं होते
- तब तक खरीदारी न करें जब तक कि आपको अपनी कमाई का पैसा न मिले
- गैर-जरूरी खर्चों के लिए पैसा कर्ज पर न लें

कर्जों के बारे में सावधान रहें क्योंकि इसकी वजह से आपको ऐसे काम करने पड़ सकते हैं जो आपको पसंद न हों या ऐसे हालात में काम करना पड़ सकता है जो आपके लिए हानिकारक हों। कुल मिलाकर इससे आपके लिए गंभीर नतीजे सामने आ सकते हैं।

# बचत



## बचत

क्या आपने चिड़ियों को घोंसला बनाते हुए देखा है? वे जाड़ों के शुरू होने से पहले ही अपने घोंसले बनाने लगती हैं। वे रोज थोड़ा-थोड़ा, मगर लगातार काम करती जाती हैं। रोज टहनियां, पत्तियां, पंख जमा करती हैं और उन्हें घोंसले में जोड़ती जाती हैं।

इसी तरह

आपकी बचत भी छोटी-छोटी, मगर नियमित होनी चाहिए।

आप किसी खास उद्देश्य/अवसर के लिए भी बचत कर सकते हैं।

आप अपने बुढ़ापे के लिए बचत कर सकते हैं।

किसी मुश्किल घड़ी में अपने बचाव के लिए पैसा जमा कर सकते हैं।

अगर आप रोज 10 रुपये भी बचा लेते हैं तो आइए देखें कि साल के अंत में आप कितना पैसा बचा लेंगे :



## बचत

समय अवधि	बचत राशि (रुपये)
प्रतिदिन (10 रुपये)	-
पहले साल के अंत में	3,650
दूसरे साल के अंत में	7,300
तीसरे साल के अंत में	10,950

इसका मतलब यह है कि आप जितना जल्दी बचाना शुरू करेंगे, आपके लिए उतना ही बेहतर होगा।

मगर, यदि आप सारी नकदी अपने पास ही रखते हैं तो हो सकता है कि आप :

- उस पैसे को किसी चीज पर खर्च कर देंगे
- हो सकता है कि आपका पैसा चोरी हो जाए
- आप हमेशा इस बात को लेकर परेशान रहेंगे कि पैसा चोरी न हो जाए

## बचत

आपके गांव के दूसरे लोग कैसे बचत करते हैं?

- पैसा घर पर रखते हैं
- मवेशी खरीदते हैं
- बचत समूह में लगाते हैं
- सूक्ष्म वित्त संस्थानों में जमा करते हैं
- बैंक में जमा करते हैं

आप अपने पैसे की बचत किस तरह करेंगे, यह तय करने के लिए आप इन चीजों पर ध्यान दीजिए:

1. पहुंच - वह साधन आपके घर और आपके कार्यस्थल यानी स्रोत और मंजिल, दोनों जगह नजदीक हो।
2. सुविधाजनक और इस्तेमाल में आसान हो।
3. सुरक्षित हो।
4. वहां आपका पैसा बढ़ता रहे, ब्याज जमा होता रहे।

## बचत

किसी बैंक में बचत खाता खोलने के बहुत सारे फायदे होते हैं :

- बैंक हमें बचत करने, पैसा एक जगह से दूसरी जगह भेजने और कर्जा लेने में मदद देते हैं।
  - बैंक में जमा बचत पर हमें ब्याज मिलता है।
  - बैंक में पैसा जमा करने पर लंबे दौर में हमें ज्यादा आर्थिक सुविधा मिलती है।
  - आप अपने पैसे पर नजर रख सकते हैं।
  - आप बैंक से कर्जा ले सकते हैं।
  - आप अपने कार्यक्षेत्र से अपने गांव में पैसा भिजवा सकते हैं।
  - सीज़न के आखिर में जब आपको अंतिम भुगतान मिलता है तो आप उसे बैंक खाते में जमा करके आराम से अपने गांव जा सकते हैं।
  - किसी योजना/लाभ के तहत आपके नाम आने वाला पैसा आपके बैंक अकाउंट में जमा हो सकता है।
- इस तरह के फैसले लेने के लिए परिवार की महिलाओं से भी बात जरूर करें।

# प्रधानमंत्री जन धन योजना



## प्रधानमंत्री जन धन योजना

प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) लोगों को आर्थिक सुविधाएं प्रदान करने के लिए शुरू किया गया एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के तहत लोगों को बैंकिंग, बचत और जमा खाते, रेमिटेस, ऋण, बीमा और पेंशन आदि सुविधाएं बहुत कम लागत पर मुहैया कराई जाती हैं।

इसके लिए आप किसी भी बैंक की शाखा या बैंक मित्र के पास जाकर अपना खाता खोल सकते हैं। बैंक मित्र स्थानीय बैंक द्वारा स्वीकृति व्यक्ति होते हैं। आमतौर पर सेवानिवृत्त बैंक कर्मचारी, सेवानिवृत्त अध्यापक, सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारी, उचित दर दुकान/किराना/मेडिकल स्टोर के मालिक, पीसीओ ऑपरेटर आदि को बैंक मित्र के रूप में चुना जाता है।

इस योजना के तहत खाताधारक को एक रुपये डेबिट कार्ड जारी किया जाता है। इस कार्ड को आप सभी एटीएम मशीनों में इस्तेमाल कर सकते हैं।

## प्रधानमंत्री जन धन योजना

रुपे कार्ड के तहत खाताधारक को एक लाख रुपये तक का दुर्घटना बीमा भी मिलता है जिसके लिए खाताधारक से कोई शुल्क वसूल नहीं किया जाता है।

अपने मोबाइल नम्बर को बैंक खाते से लिंक कराएं ताकि एसएमएस के माध्यम से आपको सारे लेन-देन की सूचना मिलती रहे।

खाता खोलने के लिए आपके पास अधिकृत रूप से स्वीकार्य दस्तावेज होने चाहिए।

जन धन खाते खोलने के लिए बैंक कर्मचारी शनिवार को सुबह ८ बजे से शाम ८ बजे तक शिविर भी आयोजित करते हैं।

## कुछ खास बातें

- खर्च करने या कर्ज लेने से पहले अच्छी तरह सोचें।
- लाजिमी खर्चों में कटौती करें। मसलन, शादी, तीज-त्यौहारों पर हाथ थाम कर खर्चा करें।
- कर्ज पर चीजें खरीदना कम करें।
- बचत बढ़ाएं।
- पेंशन और बीमा योजनाओं से जुड़ें।
- अपना पैसा सुरक्षित स्थान पर रखें ताकि आपको उसको खर्च करने का लोभ न रहे।
- खर्च और बचत से जुड़े मामलों में अपने घर के सभी लोगों से सलाह-मशविरा करें।

**By**



**In partnership with**



**Funded By the  
European Union**